सूरह अल-फातिहा पर विचार (3 का भाग 2)

रेटिंग:

विवरण: ?????? ????? ?? ???? ???? ???? ???? ???? ??? ?? ????????? ??? 2: ???? ??? ????? ?? ???????? ?? ?????? ?? ??????? ?? ???? ????? ??????? ?? ????? ?? ???????? ?? ??????? ????

श्रेणी: पाठ > पवित्र क़ुरआन > चयनित छंद की व्याख्या

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

·सूरह अल-फातिहा के पहले चार छंदों की व्याख्या छंद-दर-छंद सीखना।

अरबी शब्द

·*????* - क़ुरआन का अध्याय।

·*????* - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है।

·*???? ?????* - मानवजाति के लिए अल्लाह का संदेश जो पैगंबर मुहम्मद के शब्दों द्वारा दिया गया हो, जो आमतौर पर आध्यात्मिक या नैतिक विषयों से संबंधित होता है।

1. अल्लाह के नाम से शुरू, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

सूरह की शुरुआत ईश्वर के उचित नाम अल्लाह के आह्वान के साथ होती है, अल्लाह का पहला रहस्योद्घाटन जो पैगंबर को प्रकट किया गया था उसके अनुसार ईश्वर के पवित्र नाम से शुरुआत:

"अपने पालनहार के नाम से पढ़, जिसने पैदा किया।" (क़ुरआन 96:1)

यह इस्लामी विश्वदृष्टि के अनुरूप है:

“वही प्रथम, वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है” (क़ुरआन 57:3)

इस आह्वान में ईश्वर के तीन नाम हैं:

·अल्लाह

·अर-रहमान (अत्यन्त कृपाशील)

·अर-रहीम (दयावान)

'अल्लाह' को ईश्वर का व्यक्तिगत नाम माना जाता है, जिसे किसी और के साथ साझा नहीं किया जाता है। यह नाम किसी को नहीं दिया गया है। अरबी भाषा में इसका कोई बहुवचन नहीं है। हम अपने बच्चों का ये नाम नहीं रख सकते हैं।

इसके तीन अर्थ हैं।

पहला, 'अल्लाह' नाम में निहित अर्थ यह है कि दिल परमात्मा के लिए तरसता है और उसे जानने, उससे मिलने और उसे देखने की इच्छा रखता है, अल्लाह को याद करने में दिल को आराम मिलता है; उसकी पूजा और भक्ति का एकमात्र उद्देश्य अल्लाह है। दिल तब तक अल्लाह की ओर मुड़ते हैं जब तक कि ईश्वर के पैगंबर के शब्दों को दोहरा न लिया जाए:

“मैं आपसे मिलने की लालसा के कारण आपके नेक चेहरे को देखने का आनंद मांगता हूं...”

दूसरा, 'अल्लाह' शब्द में निहित एक और अर्थ उसकी अंतर्निहित अविवेकपूर्णता है। मन ईश्वर को समझ नहीं सकता क्योंकि वास्तव में ईश्वर रहस्यमय हैं, सिवाय उसके जितना उन्होंने खुद को क़ुरआन या अपने पैगंबर के माध्यम से हमारे सामने प्रकट किया है।

“वे उसका पूरा ज्ञान नहीं रखते।” (क़ुरआन 20:110)

तीसरा, 'अल्लाह' "ईश्वर" है, सिर्फ उसी की पूजा की जा सकती है। इसलिए आस्था की गवाही (ला इलाहा इल्लल्लाह) में इसका वर्णन है। बहुत सी चीज़ों को देवता मान लिया गया है, लेकिन ये सब झूठें हैं:

“ये इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वही असत्य है”(क़ुरआन 22:62)

दो विशेषण अर-रहमान और अर-रहीम, जो बिस्मिल्लिाह का हिस्सा हैं, संज्ञा रहमा से प्राप्त हुए हैं, जो "दया", "करुणा", "प्रेम कोमलता" और अधिक व्यापक रूप से "कृपा" का प्रतीक है। सटीक अर्थ क्या है जो दो शब्दों को अलग करता है? शायद सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि रहमान शब्द ईश्वर के अस्तित्व की अवधारणा में निहित और अविभाज्य कृपा की गुणवत्ता को दर्शाता है, जबकि रहीम अपनी गतिविधि के एक पहलू को व्यक्त करता है। दोनों नाम सृष्टि के साथ दिव्य संबंध को परिभाषित करने में मदद करते हैं... करुणा, दया और प्रेमपूर्ण कोमलता पर आधारित संबंध। तथ्य को निम्नलिखित हदीस क़ुदसी में खूबसूरती से व्यक्त किया गया है जहां अल्लाह कहता है:

“वास्तव में मेरी दया मेरी सजा से बड़ी है।” (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लिम)

एक अन्य प्रामाणिक हदीस में, अल्लाह के दूत (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) कहते हैं:

“अल्लाह की दया के सौ हिस्से हैं, जिनमें से केवल एक को उसने इंसानों, जिन्न और सभी जानवरों की प्रजातियों में रखा है। दया के इस हिस्से से वे एक दूसरे के प्रति स्नेह और दया दिखाते हैं, और इससे एक जंगली जानवर अपने बच्चों के प्रति स्नेह दिखाता है। अल्लाह ने बाकी के निन्यानवे हिस्से न्याय के दिन के लिए अपने दासों के लिए रख लिया हैं।” (सहीह मुस्लिम)

इसलिए इंसान को कभी भी अल्लाह की दया से निराश नहीं होना चाहिए चाहे उसके गुनाह कितने ही बड़े क्यों न हों। महान अल्लाह कहता है:

“आप कह दें मेरे उन भक्तों से, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की दया से। वास्तव में, अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को। निश्चय वह अति क्षमी, दयावान् है।” (क़ुरआन 39:53)

अंत में, अर-रहमान अल्लाह का एक विशिष्ट नाम है। रहीम के विपरीत किसी को भी यह नाम नहीं दिया जा सकता है और न ही इसकी विशेषता से किसी को वर्णित किया जा सकता है।

2. सब प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं, जो सारे संसारों का पालनहार है

अल-हम्द, प्रशंसा के रूप में अनुवादति, प्रशंसा और कृतज्ञता के अधकि सटीक रूप है। 'सभी प्रशंसा और धन्यवाद अल्लाह के लिए हैं।' सवाल उठता है: कसि लिए? जसि तरह अल्लाह की उसकी पूर्णता, महमिा, करुणा, प्रेम, महानता और सुंदरता के लिए प्रशंसा की जाती है, उसी तरह उसे सभी शारीरकि और आध्यात्मकि आशीर्वादों के लिए भी धन्यवाद दयिा जाता है। वश्विासयिों का दलि अल्लाह के नाम के उल्लेख पर ही अल्लाह की प्रशंसा करने के लिए उछलता है, क्योंकि दलि का अस्तत्वि ईश्वर के लिए है। हर पल, हर सांस के साथ, और हर धड़कन के साथ, ईश्वर का आशीर्वाद कई गुना बढ़ जाता है। पूरी सृष्टि ईश्वरीय कृपा में डूबी हुई है, वशिेषकर मनुष्य। शुरुआत में और अंत में सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है:

“तथा वही अल्लाह है, कोई अन्य वन्दनीय नहीं है उसके सवाि, उसी के लिए सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में” (क़ुरआन 28:70)

यहां हम अल्लाह का एक और नाम सीखते हैं: अर-रब्ब (स्वामी, पालनहार)। अरबी अभव्यिक्ति अर-रब्ब में व्यापक अर्थ शामलि है जो कसिी अन्य भाषा में एक शब्द द्वारा आसानी से व्यक्त नहीं कयिा जा सकता है। इसमें कसिी भी चीज़ पर अधकिार करने और, परणिामस्वरूप, उस पर अधकिार करने के साथ-साथ कसिी भी चीज़ की स्थापना से लेकर उसके अंतमि समापन तक पालन-पोषण और बढ़ावा देने के वचिार शामलि हैं। यह पूरी सृष्टि के एकमात्र स्वामी और पालनहार के रूप में अल्लाह पर लागू होता है और इसलिए सभी अधकिार का अंतमि स्रोत अल्लाह है।

अल्लाह दुनयिा का स्वामी है। इसे समझाने के लिए, अल्लाह उसके सवाि सब कुछ का मालकि है, वह अपने सभी रूपों में अस्तत्वि बनाए रखता है।

3. अत्यंत कृपाशील और दयावान्

अल्लाह अपने दया के नाम दोहराता है: अर-रहमान और अर-रहीम। यदि लोग 'संसारों के ईश्वर' के वर्णन से अभभिूत महसूस करते हैं, तो हमें याद दलिाया जाता है कि वह इस दुनयिा के राजाओं की तरह नहीं हैं। अल्लाह कोई अत्याचारी नहीं है जो अपनी प्रजा पर जबरदस्ती की दमनकारी पकड़ दखिाता है, बल्कि वह अपनी कोमल दया से हमारी देखभाल करता है। जब हम अपनी मां के गर्भ में थे, अर-रहमान ने हमारी देखभाल की। जब हमें भोजन या पानी की आवश्यकता होती है, जब भी हमारे जीवन में हमें अल्लाह की आवश्यकता होती है और उसका नाम पुकारा जाता है, तो अर-रहीम हमारे लिए मौजूद रहता है।

4. न्याय के दिन का स्वामी।

अपने दासों को यह समझाने के बाद कि उसकी प्रशंसा क्यों करनी चाहिए - वह देखभाल करता है और पोषण करता है, वह हमारी सभी जरूरतों का ख्याल रखता है - वह हमें बताता है कि वह अल-मलिक, स्वामी और राजा है। वह शक्तिशाली है और राज्य में अपनी इच्छा को पूरा करने की क्षमता रखता है। हम मालिक की तरफ से आते हैं। हमारे पास कुछ भी नहीं है, लेकिन हम किसी के हैं। वह हमारा ध्यान उस दिन की ओर ले जाता है जब वह एकमात्र पीठासीन न्यायाधीश होगा और सभी उसके सामने विनम्रतापूर्वक खड़े होंगे। वह न्यायपूर्वक न्याय करेगा, इसलिए यह मत भूलो कि तुम्हारी वापसी उसी की ओर है। यह मत सोचो कि मौत के साथ सब खत्म हो जाएगा। याद रखो, एकमात्र राजा द्वारा आपके सांसारिक आचरण के आधार पर आपका न्याय किया जाएगा, और कोई भी उसके न्याय को साझा नहीं करेगा।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/114

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।